ॐ श्री कृष्ण शरणं मम ॐ
卐 कर्मसंन्यासयोग नामक पाँचवाँ अध्याय 卐

ठाकुर भिम सिंह द्वारा प्रस्तुत
श्रीमद्भगवद्गीता अमृत
श्लोकों के गूढ़ रहस्यों के साथ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कर्मसंन्यासयोग- नामक पाँचवाँ अध्याय

01-06 सांख्ययोग और कर्मयोग का निर्णय

07-12 सांख्ययोगी और कर्मयोगी के लक्षण और उनकी महिमा

13-26 ज्ञानयोग का विषय

27-29 भक्ति सहित ध्यानयोग का वर्णन

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अर्जुन उवाच ।
संन्यासं कर्मणां कृष्ण, पुनर्योगं च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं, तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ।। 1।।

अर्जुन वोले— हे कृष्ण, आप कर्मसंन्यास (**कर्मों का स्वरूप से त्याग करने की**) और कर्मयोग (**निशकामभाव से लोकहित के निमित कर्म करने की**) दोनों की प्रशंसा करते हैं. इन दोनों में एक, जो निश्चितरूप से कल्याणकारी हो, मेरे लिए कहिये. (५.०५ भी देखें) (५.०१)।

BG 5.1: Arjun said: O Shree Krishna, you praised *karm sanyās* (the path of renunciation of actions), and You also advised to do *karm yog* (work with devotion). Please tell me decisively which of the two is more beneficial?

केवल कर्मों का त्याग करने से जीव का कल्यान नहीं हो सकता जब तक इन्द्रियों के विषय में मन आस्तक रहता है । इसलिये मन को काबू में करने के लिये पहल इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना है । इस के लिये कठिन परिश्रम और अभ्यास के साथ-साथ साधू-संग, गुरूजनों की सेवा, कीर्तन-भजन, संयम से खाना-पीना, सोना-जागना, सर्दी-गरमी को सहन करना, शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिये योग साधन आदि करना पड़ता है । चित की शुद्धि के लिये बहुत समय लग जाता है इन ऊपर बाताये गये कर्मों को करने के लिये । इसी कारण भगवान् अर्जुन को कर्मयोग में तत्पर होने के लिये आदेश दे रहें हैं । निशकामभाव से किया हुआ कर्म एक कर्मयोगी के चित को सिग्रता से शुद्धि प्रदान करता है क्योकि निशकामता में अहमभाव, कामना, इच्छा आदि नहीं रहतें ।
निशकाम कर्मयोगी का मन सेवाभक्ति में विलीन हो जाता है और कर्मयोगी के राग-द्वेश और विकार आदि सब मिट जाते हैं ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्रीभगवानुवाच ।
संन्यासः कर्मयोगश्च, निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ।। 2।।

श्रीभगवान बोले— कर्मसंन्यास और कर्मयोग ये दोनों ही परम कल्याणकारक हैं, परन्तु उन दोनों में कर्मसंन्यास से कर्मयोग श्रेष्ठ है. (५.०२)।
कारण की निशकाम कर्मयोग (सेवाभाव) से मन को संतोष और परम शान्ति मिलती है ।

BG 5.2: The Supreme Lord said: Both the path of *karm sanyās* (renunciation of actions) and *karm yog* (working in devotion) lead to the supreme goal. But *karm yog* is superior to *karm sanyās*.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ।। 3।।

जो मनुष्य न किसी से द्वेष करता है और न किसी वस्तु की आकांक्षा करता है, वैसे मनुष्य को सदा संन्यासी ही समझना चाहिए; क्योंकि हे महाबाहो, राग-द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित मनुष्य सहज ही बन्धन-मुक्त हो जाता है. (५.०३)

BG 5.3: The *karm yogis*, who neither desire nor hate anything, should be considered always renounced. Free from all dualities, they are easily liberated from the bonds of material energy.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।
एकम् अप्य् आस्थितः सम्यग् उभयोर् विन्दते फलम् ॥४॥

अज्ञानी लोग ही, न कि पण्डितजन, कर्मसंन्यास और कर्मयोग को एक दूसरे से भिन्न समझते हैं, क्योंकि इन दोनों में से किसी एक में भी अच्छी तरह से स्थित मनुष्य दोनों के फल को प्राप्त कर लेता है. (५.०४)

BG 5.4: Only the ignorant speak of *sānkhya* (renunciation of actions, or *karm sanyās*) and *karm yog* (work in devotion) as different. Those who are truly learned say that by applying ourselves to any one of these paths, we can achieve the results of both.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यत् सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद् योगैर् अपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥५॥

ज्ञानयोगियों द्वारा जो धाम प्राप्त किया जाता है, कर्मयोगियों द्वारा भी वही प्राप्त किया जाता है. अतः जो मनुष्य कर्मसंन्यास और कर्मयोग को फलरूप में एक देखता है, वही वास्तव में देखता (अर्थात् समझता) है. (६.०१, ६.०२ भी देखें) (५.०५)

BG 5.5: The supreme state that is attained by means of *karm sanyās* is also attained by working in devotion. Hence, those who see *karm sanyās* and *karm yog* to be identical, truly see things as they are.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

संन्यासस् तु महाबाहो दुःखम् आप्तुम् अयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर् ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥६॥

हे अर्जुन, कर्मयोग की निस्वार्थ सेवा के बिना शुद्ध संन्यास-भाव (अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों में कर्तापन के भाव का त्याग) का प्राप्त होना कठिन है. ।
यहाँ पर भगवान् अर्जुन को समझा कर बतलाते हैं कि संन्यासयोग कर्म को निस्वार्थभाव से करते-करते अपने-आप सुगम्ता से प्राप्त हो जाता है । सच्चा कर्मयोगी शीघ्र ही परमात्मा को प्राप्त करता है. (४.३१, ४.३८ भी देखें) (५.०६)

BG 5.6: Perfect renunciation *(karm sanyās)* is difficult to attain without performing work in devotion *(karm yog)*, O mighty-armed Arjun, but the sage who is adept in *karm yog* quickly attains the Supreme.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्न् अपि न लिप्यते ॥७॥

निर्मल अन्तःकरण वाला कर्मयोगी, जिसका मन और इन्द्रियां अपने वश में हैं और जो सभी प्राणियों में एक ही आत्मा को देखता है, कर्म करते हुए भी उनसे लिप्त नहीं होता. (५.०७)

BG 5.7: The *karm yogis*, who are of purified intellect, and who control the mind and senses, see the Soul of all souls in every living being. Though performing all kinds of actions, they are never entangled.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नैव किंचित् करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ् शृण्वन् स्पृशञ् जिघ्रन्न् अश्नन् गच्छन् स्वपञ् श्वसन् ॥८॥
प्रलपन् विसृजन् गृह्णन्न् उन्मिषन् निमिषन्न् अपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥९॥

तत्त्वज्ञान को जानने वाला कर्मयोगी ऐसा समझता है कि मैं तो कुछ भी नहीं करता हूं. देखता, सुनता, स्पर्श करता, सूंघता, खाता, चलता, सोता, श्वास लेता, देता, लेता, बोलता तथा आंखों को खोलता और बन्द करता हुआ भी वह ऐसा जानता है कि समस्त इन्द्रियां ही अपने-अपने विषयों में विचरण कर रही हैं. (३.२७, १३.२९, १४.१९ भी देखें) (५.०८-०९)।

याद रहे कि इन्द्रियाँ स्थूल-शरीर के अंग नहीं हैं। इसीलिये वे स्थूल शरीर से परे बतायें गयें हैं। जिन की इन्द्रियाँ उन के बस में होती हैं उन का मन हमेशा शांत रहता है।

BG 5.8-9: Those steadfast in karm yog, always think, "I am not the doer," even while engaged in seeing, hearing, touching, smelling, moving, sleeping, breathing, speaking, excreting, grasping, and opening or closing the eyes. With the light of divine knowledge, they see that it is only the material senses that are moving amongst their objects.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ब्रह्मण्य् आधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रम् इवाम्भसा ॥१०॥

जो मनुष्य कर्मफल में आसक्ति का त्यागकर, सभी कर्मों को परमात्मा में अर्पण करता है, वह कमल के पत्ते की तरह पापरूपी जल से कभी लिप्त नहीं होता. (५.१०)।

BG 5.10: Those who dedicate their actions to God, abandoning all attachment, remain untouched by sin, just as a lotus leaf is untouched by water.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कायेन मनसा बुद्धया केवलैर् इन्द्रियैर् अपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥११॥

कर्मयोगीजन शरीर, मन, बुद्धि और इन्द्रियों द्वारा आसक्ति (attachment) को त्यागकर केवल अन्तःकरण की शुद्धि के लिए ही कर्म करते हैं. (५.११)
जाब तक अन्तःकरण की शुद्धि नहीं होती तब तक शान्ति कैसे मिल सकती ?

BG 5.11: The yogis, while giving up attachment, perform actions with their body, senses, mind, and intellect, only for the purpose of self-purification.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिम् आप्नोति नैष्ठिकीम्।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥१२॥

कर्मयोगी कर्मफल को त्यागकर (अर्थात् परमेश्वर को अर्पणकर) परम शान्ति को प्राप्त होता है और सकाम मनुष्य कर्मफल में आसक्ति के कारण बन्ध जाता है. (५.१२)।

और जनम-मरण के चकर में फसा रहता है ।

BG 5.12: Offering the results of all activities to God, the *karm yogis* attain everlasting peace. Whereas those who, being impelled by their desires, work with a selfish motive become entangled because they are attached to the fruits of their actions.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी ।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन् न कारयन् ॥१३॥

कर्मयोगी सभी कर्मों (के फल) को सर्वथा त्यागकर — न कोई कर्म करता हुआ और न करवाता हुआ — नौ द्वार वाले शरीररूपी घर में सुख से रहता है. (५.१३) ।
नौ द्वार हैं : मुख, दो नासिकाछिद्र, दो आँखे और दो कान, ये सात ऊपर के द्वारहैं औरगुदा और उपस्थ ये दो नीचे के द्वार हैं ।

BG 5.13: The embodied beings who are self-controlled and detached reside happily in the city of nine gates free from thoughts that they are the doers or the cause of anything.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः ।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस् तु प्रवर्तते ॥१४॥

ईश्वर प्राणियों में कर्तापन, कर्म तथा कर्मफल के संयोग को वास्तव में नहीं रचता है. प्रकृति मां ही (अपने गुणों से) सब कुछ करवाती है. (५.१४)

BG 5.14: Neither the sense of doership nor the nature of actions comes from God; nor does He create the fruits of actions. All this is enacted by the modes of material nature (*guṇas*).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नादत्ते कस्यचित् पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५॥

ईश्वर किसी के पाप और पुण्य कर्म का भागी नहीं होता. अज्ञान के द्वारा ज्ञान को ढक जाने के कारण ही सब जीव भ्रमित होते हैं (तथा पाप कर्म करते हैं). (५.१५) ।

BG 5.15: The omnipresent God does not involve Himself in the sinful or virtuous deeds of anyone. The living entities are deluded because their inner knowledge is covered by ignorance.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ज्ञानेन तु तद् अज्ञानं येषां नाशितम् आत्मनः ।
तेषाम् आदित्यवज् ज्ञानं प्रकाशयति तत् परम् ॥१६॥

परन्तु जिनका अज्ञान तत्त्वज्ञान द्वारा नष्ट हो जाता है, उनका तत्त्वज्ञान सूर्य की तरह सच्चिदानन्द परमात्मा को प्रकाशित कर देता है. (५.१६) .
वे हर परिस्थिति में शांत रहते हैं ।

BG 5.16: But for those whose ignorance is destroyed by divine knowledge, the Supreme Entity is revealed, just as the sun illumines everything when it rises.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तद्बुद्धयस् तदात्मानस् तन्निष्ठास् तत्परायणाः ।
गच्छन्त्य् अपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥१७॥

जिनका मन और जिनकी बुद्धि परमात्मा में स्थित है, परमात्मा में जिनकी निष्ठा (faith, belief) है, ब्रह्म ही जिनका परम लक्ष्य है, ऐसे मनुष्य ज्ञान के द्वारा पापरहित होकर परमगति को प्राप्त होते हैं (अर्थात् उनका पुनर्जन्म नहीं होता). (५.१७)

BG 5.17: Those whose intellect is fixed in God, who are completely absorbed in God, with firm faith in Him as the supreme goal, such persons quickly reach the state from which there is no return, their sins having been dispelled by the light of knowledge.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥१८॥

ज्ञानीजन (सबों में परमात्मा को ही देखने के कारण) विद्या और विनय से सम्पन्न ब्राह्मण तथा गाय, हाथी, कुत्ते, चाण्डाल आदि सबों को समभाव से देखते हैं. (६.२९ भी देखें) (५.१८) । ऊँच-नीच का भाव देखने वाले अज्ञानी होते हैं ।

BG 5.18: The truly learned, with the eyes of divine knowledge, see with equal vision a Brahmin, a cow, an elephant, a dog, and a dog-eater.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इहैव तैर् जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥१९॥

ऐसे समदर्शी मनुष्यों ने इसी जीवन में ही संसार के सम्पूर्ण कार्यों को समाप्त कर लिया है. वे ब्रह्म में ही स्थित रहते हैं, क्योंकि ब्रह्म निर्दोष और सम है. (१८.५५ तथा छा.उ. २.२३.०१ भी देखें) (५.१९)

BG 5.19: Those whose minds are established in equality of vision conquer the cycle of birth and death in this very life. They possess the flawless qualities of God, and are therefore seated in the Absolute Truth.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिर् असंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥२०॥

जो मनुष्य प्रिय को प्राप्तकर हर्षित न हो और अप्रिय को प्राप्तकर उद्विग्न न हो, ऐसा स्थिरबुद्धि, संशयरहित और ब्रह्म को जानने वाला मनुष्य परब्रह्म परमात्मा में नित्य स्थित रहता है. (५.२०)

BG 5.20: Established in God, having a firm understanding of divine knowledge and not hampered by delusion, they neither rejoice in getting something pleasant nor grieve on experiencing the unpleasant.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बाह्यस्पर्शेष्व् असक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत् सुखम् ।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखम् अक्षयम् अश्नुते ॥२१॥

ऐसा ब्रह्मयुक्त व्यक्ति — अपने अन्तःकरण में ब्रह्मानन्द को प्राप्तकर — इन्द्रियों के विषयों से अनासक्त हो जाता है और अविनाशी परम सुख का अनुभव करता है. (५.२१)

BG 5.21: Those who are not attached to external sense pleasures realize divine bliss in the self. Being united with God through Yog, they experience unending happiness.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥२२॥

इन्द्रियों और विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले सुखों का आदि और अन्त होता है तथा वे (अन्त में) दुःख के कारण होते हैं. इसलिए हे कौन्तेय, बुद्धिमान् मनुष्य उनमें आसक्त नहीं होते. (१८.३८ भी देखें) (५.२२)

BG 5.22: The pleasures that arise from contact with the sense objects, though appearing as enjoyable to worldly-minded people, are actually a

source of misery. O son of Kunti, such pleasures have a beginning and an end, so the wise do not delight in them.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥२३॥

जो मनुष्य मृत्यु से पहले काम और क्रोध से उत्पन्न होने वाले वेग को सहन करने में समर्थ होता है, वही योगी है और वही सुखी है. (५.२३)

BG 5.23: Those persons are yogis, who before giving up the body, are able to check the forces of desire and anger; and they alone are happy.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

योऽन्तः सुखोऽन्तरारामस् तथान्तर् ज्योतिर् एव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥२४॥

जो योगी आत्मा में ही सुख पाता है, आत्मा में ही रमण करता है तथा आत्मज्ञानी है, वह ब्रह्मनिर्वाण अर्थात् मुक्ति प्राप्त करता है. (५.२४)

BG 5.24: Those who are happy within themselves, enjoying the delight of God within, and are illumined by the inner light, such yogis are united with the Lord and are liberated from material existence.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणम् ऋषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥२५॥

जिनके सब पाप नष्ट हो गये हैं, जिनके सभी संशय ज्ञान द्वारा नष्ट हो चुके हैं, जिनका मन वश में है और जो सभी प्राणियों के हित में रत रहते हैं, ऐसे ब्रह्मवेत्ता मनुष्य ब्रह्म को प्राप्त होते हैं. (५.२५)

BG 5.25: Those holy persons, whose sins have been purged, whose doubts are annihilated, whose minds are disciplined, and who are devoted to the welfare of all beings, attain God and are liberated from material existence.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥२६॥

काम और क्रोध से रहित, जीते हुए चित्त वाले तथा आत्मज्ञानी व्यतियों को आसानी से ब्रह्मनिर्वाण की प्राप्ति होती है. (५.२६)

BG 5.26: For those *sanyāsīs*, who have broken out of anger and lust through constant effort, who have subdued their mind, and are self-realized, liberation from material existence is both here and hereafter.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

स्पर्शान् कृत्वा बहिर् बाह्यांश् चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥२७॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर् मुनिर् मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥२८॥

विषयों का चिन्तन न करता हुआ, नेत्रों की दृष्टि को भौंहों के बीच में स्थित करके, नासिका में विचरने वाले प्राण और अपान वायु को सम करके, जिसकी इन्द्रियां, मन और बुद्धि वश में है, जो मोक्ष परायण है तथा जो इच्छा, भय और क्रोध से सर्वथा रहित है, वह मुनि सदा मुक्त ही है. (५.२७-२८)

BG 5.27-28: Shutting out all thoughts of external enjoyment, with the gaze fixed on the space between the eye-brows, equalizing the flow of the incoming and outgoing breath in the nostrils, and thus controlling the senses, mind, and intellect, the sage who becomes free from desire and fear, always lives in freedom.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भोक्तारं यज्ञतपसां, सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां, ज्ञात्वा मां शान्तिम् ऋच्छति ॥२९॥

मेरा भक्त मुझको सब यज्ञ और तपों का भोक्ता, सम्पूर्ण लोकों का महेश्वर और समस्त प्राणियों का मित्र जानकर शान्ति को प्राप्त करता है. (५.२९)

BG 5.29: Having realized Me as the enjoyer of all sacrifices and austerities, the Supreme Lord of all the worlds and the selfless friend of all living beings, My devotee attains peace.

प्रश्नः-इस श्लोक में भगवान् अपने को सब के सुहृद् बताएँ हैं । अर्थात् बिना किसी कारण सब का हित चाहनेवाले है, तो फिर वे प्राणियों को ऊँच-नीच गतियों में क्यों भेजते हैं ?

उत्तरः- सब के सुहृद् होने से ही तो भगवान् प्राणियों को उन के कर्मों के अनुसार ऊँच-नीच गतियों में भेज कर उन के पुण्य-पापों से शुद्ध करते हैं, पुण्य-पाप के बन्धन से ऊँचा ऊठाते हैं । (९--२०-२१)

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

गीता दर्पण के पाँचवे अध्याय का तात्पर्य :-

मनुष्य को अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों के आने पर सुखी-दुखी, राजी नाराज नहीं होना चाहिये। ये इस लिये, क्योंकि इन सुख-दुख आदि द्वन्द्वों में फसा हुआ मनुष्य, संसार से ऊँचा नहीं उठ सकता।

स्त्री, पुत्र, परिवार, धन-सम्पति का केवल स्वरूप से त्याग करने वाला संन्यासी नहीं है, प्रत्युत जो अपने कर्तव्य का पालन करते हुये राग-द्वेष नहीं करता,वही सच्चा संन्यासी है। जो अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों के आने पर सुखी अथवा उद्विग्न नहीं होता ऐसा वह द्वन्द्वों से रहित मनुष्य, परमात्मा में ही स्थित रहता है। सांसारिक सुख-दुख, अनुकूलता-प्रतिकूलता आदि द्वन्द्व दुखों के ही कारण हैं। अतः बुद्धिमान् मनुष्य उन में नहीं फसता।

Gita Essence in English – Chapter 5

It is not necessary for human beings to be happy-sad, pleased-angry, due to their normal and practical conditions. This is because a man trapped in these dualities of happiness and sorrow etc, cannot rise above the mundane world.

The one who has given up only the desires of his wife, son, family and wealth, is not a Sanyasi, but the one who has fulfilled his duties without passion and is free from hatred, is a true Sanyasi.

The one who does not become happy or sad when favourable or adverse circumstances arise, such a person is free from dualities and resides in God only. Worldly happiness and sorrows, favours and adversities, etc, are the causes of dualities. Therefore, an intelligent person does not get trapped in them.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवतगीतासूपरिष्सु ब्रह्मविद्यां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंयास योग नामक पाँचवा ऽध्याय ॥ ५ ॥